 Introduction

प्रस्तावना :-

शिवानी की जीवनी एवम् कथासाहित्य

हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल विविध प्रवृत्तियों, विधाओं और प्रभावों का काल माना गया है । इस काल में गद्य और पद्य दोनों ही रूप अपने चरम उत्कर्ष को पहुँच रहे हैं । गद्य रूपों में अनेक विधाएँ विकसित हो रही है और परिचित विधाओं में प्रभावों के आधार पर अनेक विकासात्मक परिवर्तन दृष्टिगत होते हैं । आज हमारा देश, हमारा समाज विभिन्न परिवेशों के संक्रमण काल से गुजर रहा है । समाज तथा देश का संपूर्ण परिवेश, संपूर्ण मानदंड, संपूर्ण जीवनदर्शन बदल रहे है । साहित्य और समाज कदम से कदम मिलाकर चलते हैं । अतः यह निश्चित है कि इन सबका प्रभाव साहित्य पर अवश्य ही पडेगा ।

आज का साहित्यकार इन परिवर्तनों की दौड से गुजरता है, अनुभव करता है और अपनी रचनाओं के माध्यम से वह इन्हें अभिव्यक्ति प्रदान करता है । कुछ साहित्यकार अपनी अभिरुचि के अनुसार गद्य को माध्यम बनाते हैं तथा गद्य की विविधाओं का सहारा लेकर अपनी अनुभूतियों को व्यक्त करते हैं ।

शिवानीजी ने भी इन सारे परिवेशों के परिवर्तनों को गद्य के माध्यम से अभिव्यक्ति प्रदान की है । उन्होंने इन परिवर्तनों को कहीं तो उपन्यासों के माध्यम से तो कहीं कहानियों, संस्मरणों, रेखाचित्रों आदि के माध्यम से सामाजिक परिवर्तनों को प्रतिबिंबित किया है । इनहों ने लगभग बीस-एक उपन्यास, तीस-एक कहानियाँ, कई रेखाचित्र, संस्मरण, बाल-साहित्य आदि

की रचनाओं के द्वारा आधुनिक हिन्दी साहित्य के अंतर्गत अपना विशिष्ट स्थान प्राप्त कर लिया है ।

हिन्दी साहित्य के विकास और समृद्धि के संबंध में शिवानी का योगदान सराहनीय और सर्वविदित है । ऐसे हस्ताक्षर को प्रकाश में लाना या उनकी रचना को हिन्दी साहित्य से परिचित करवाने का ही इस शोध-प्रबंध का उद्देश्य है । यह प्रथम प्रयास ही माना जायेगा । अत: इस शोध-प्रबंध के महत्व के संबंध में हमें कुछ ज्यादा नहीं कहना है ।

प्रत्येक साहित्यकार या कलाकार की रचनाओंमें अपने युगकी अभिव्यंजना अवश्य प्रस्तुत होती है । शिवानी के साहित्य में भी अपने युग की राजनैतिक, सामाजिक, पारिवारिक आदि समस्याओं एवम् सामाजिक स्थितियों का प्रतिबिंब दृश्यमान है । इनके उपन्यास, कहानी एवम् अनेक संस्मरणों के द्वारा अपने युग का चित्रण प्रतिबिंबित है । शिवानी का जन्म एक ऐसे अरसे में हुआ था जब हमारा देश आज़ाद नहीं हुआ था, किंतु साधारण जनजागृति अवश्य आ गई थी । अत: देशप्रेम स्वतंत्रता की लगन, आदि उनकी कथाओं में देखने मिलता है । इनकी रचनाओं में अनेक राजा-रानियों का एवम् राजदूतों का तथा मंत्रियों का उल्लेख भी किया गया है । इसके आधार पर हम कह सकते हैं कि स्वतंत्रता से पूर्व अनेक छोटे-छोटेनगरों के राजा-महाराजा एवम् रानियों से शिवानी की मुलाकात भी अवश्य हुइ होगी क्योंकि शिवानी के पिताजी ओरछा, जसदण आदि राज्यों के दिवान व उच्च पदाधिकारी भी रह चुके हैं । समाज दो वर्गों में विभाजित था - शासक और सामान्य प्रजाजन । विश्वयुद्ध के कारण बमीदलों की तथा ब्रिटिश दलों की चहलपहल भी शिवानी ने इस भूमि पर देखी थी । तत्पश्चात

स्वतंत्रता का आंदोलन छेडा गया, ब्रिटिश दलों का आतंक आदि का उल्लेख भी इनकी रचनाओं से परे नहीं है ।

स्वतंत्रता के पश्चात लोकशाही में मंत्रीका महात्म्य भी चित्रित है । छडीदार मोटरकार में मंत्रीकी जयजयकार, शानदार पार्टियाँ, खद्दरका महत्व, मंत्रियों की, स्वार्थ परायणता, तस्करी, मंत्रियों की मनोहारी घोषणाएँ, सत्तालोलुपता, इन्कमटेक्स चोरी, नैतिकपतन आंतरिक असमानता आदि तत्कालिन राजनैतिक परिस्थितियों का भी प्रतिबिंब उनकी रचनाओं में देखने मिलता है । चीन-भारत युद्ध तथा पाकिस्तान-भारत युद्ध का असर भी उनके साहित्य से अछूता नहीं है ।

शिवानी ने जो देखा है, परखा है, अनुभव किया है, इसे ही सत्यार्थ रूप में निरूपण किया है । उन्होंने जिन सामाजिक परिवेशों में अपने कदम रखे थे इनका वर्णन अपनी रचनाओंमें है । तत्कालिन धार्मिक,सांस्कृतिक, पारिवारिक एवम् सामाजिक परिस्थिति का असर साहित्य पर अवश्य रहा है । अनेक देव-देविओं की मनौती, हिन्दू धर्मचुस्तता तथा इसाई और मुस्लिम धर्मों में धर्मान्तर मानसिक तनाव या पारिवारिक समस्याओं के कारण सन्यास लेना तथा साधु जोगी बनना, नाथपंथी संप्रदाय का असर, पंडितों और साधुओं की बोलबाला आदि दृश्यमान है ।

शिवानी की सभी कहानियाँ प्राय: नारीप्रधान है । यद्यपि पारिवारिक व सामाजिक समस्याओं की धरातल पर ही स्थित है । परिवारमें मुख्य व्यक्ति का मान-सम्मान, आज्ञाका पालन, परिवारके लिये ही सबकुछ त्याग करने की उत्कृष्ट भावना, संयुक्त परिवार जीवन की खुशहाली आदि चित्रित है । इससे

अतिरिक्त गृहस्थ जीवनकी अनेक समस्याएँ, अनमेल विवाह का दुष्परिणाम, किसी भी अपराध के कारण या सांसारिक समस्याओं के कारण या मानसिक शान्ति प्राप्त हेतु सन्यासी (वैष्णवी) या जोगी बन जाना सामान्य था । "सती", "तोप", स्वयंसिद्धा, अपराजिता आदि के स्त्री पात्रों द्वारा स्त्री के विविध रूपों का भी उल्लेख है । प्रेमी से मिलकर पतिकी हत्या करनेवाली तथा अनपढ होते हुए भी प्रेमी की इज्जत, शान शौकत आबरू को बचाने अपने अवैध संतान की हत्या करके महान बलिदान करनेवाली स्त्रियों का भी चित्रांकन है । उन दिनों क्षय, हैजा, कोढ आदि विशेष भयंकर रोग थे, "मंगला" आदि ग्रहों का विघ्न, जादू टोना, तावीज जैसी अनेक मान्यताओं का चित्रण भी उनकी रचनाओं में दृश्यमान है । "हीरा" के पात्र द्वारा "परिवार नियोजन" में नहीं माननेवाली स्त्रीका भी अंकन है । बाहरी अंचल के भीतर दबी हुई वासना तथा घुंघट में मुँह छुपाये बैठी ग्राम्य नारी से लेकर पाश्चात्य रंगों में रंगी कटे छटे बाल तथा अल्पवस्त्रों से सज्जित नारी के पात्र से भी सामाजिक रूपों का ख्याल आता है ।

दहेजप्रथा, उसके परिणाम, पुत्री का धार्मिक क्रियाकाण्ड करना जैसे कि मुखाग्नि देना आदि, वैधव्य, अवैध संतान, अनैतिक संबंध, उसके परिणाम आर्थिक असमानता, मुल्यों का विघटन, नये पुराने आदर्शों के सिद्धान्तों का द्वन्द्व, शिक्षापात्र नारी का नये रूप में विकास और तज्जन्य उलझनें आदि पारिवारिक व सामाजिक समस्याओं का प्रतिबिंब उनके साहित्य पर दृष्टव्य है ।

उक्त सभी बातों का सबूत हमें शिवानी की कई कहानियों, संस्मरण तथा उपन्यासों से ज्ञात होता है । "पुष्पहार" तथा "करिए छिमा", "मायापूरी"

आदि कहानियों में मंत्रियों की अनोखी छटा देखने मिलती है । "सुरंगमा" का नायक मंत्री दिनकर जैसे समाजसेवक के चरित्रको शिवानीने बडी ही कुशलता से चित्रित किया है । इस यथार्थवादी उपन्यास में पात्रों का, समाज का, राजनीति का यथार्थ चित्रण है । समाज की रूढ़ियां - अवैध सन्तान को न स्वीकारने की विडम्बना आदि निरूपित है ।

इतने महत्वपूर्ण हस्ताक्षर पर अभी तक समग्रतया कार्य नहीं हो पाया है । छिटपूट रूपमें कुछ काम अवश्य हुआ है लेकिन बहुमुखी प्रतिभा के धनि तथा सफलता के शिखर पर विराजमान शिवानीजी पर समग्रतया विचार नहीं किया गया है । इस शोध-प्रबंध के द्वारा इसी कमी को दूर करनेका विनम्र प्रयास किया गया है । ऐसी सशक्त लेखिका के संबंधमें जब ज्यादा विचार-विमर्श न हुआ तो एक अभाव सा खटकता है । इसी अभाव को दूर करनेका प्रयास इस शोध-प्रबंध के माध्यम से किया गया है ।

मेरे इस शोध-प्रबंध की सामग्री बटोरनेमें मैंने अनेक व्यक्ति एवम् पुस्तकालयों से प्राप्त करने का यथेष्ट प्रयास किया है । शिवानीजी के स्नेहमयी पत्रोच्चार का विशेष योगदान रहा है । उन्हों ने स्वंय ही मुझे अपने संम्पूर्ण साहित्यकी जानकारी दी कि उनके उपन्यास, कहानियाँ, संस्मरण-रेखाचित्र या बाल-कहानियाँ कौन कौन सी है तथा वे सभी पुस्तकें प्राय: कहाँ कहाँ से प्रकाशित हुई हैं, इसके अतिरिक्त कु॰ शशिबाला पंजाबी द्वारा प्रस्तुत लघुकृति का भी योगदान रहा है ।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध का विस्तरण निर्दिष्ट अध्यायों में किया गया है ।

** प्रथम अध्याय :

शिवानीकी जीवनी और व्यक्तित्व - जन्म - पारिवारिक स्थिति - बचपन - शिक्षा-दीक्षा - लाड़प्यार - व्यावहारिक जीवन और संघर्ष - साहित्यिक प्रेरणा और प्रतिफलन - कृतियाँ और साहित्यिक व्यक्तित्व - व्यवसाय - निष्कर्ष ।

** द्वितीय अध्याय :

शिवानी के कथा साहित्यका वर्गीकरण -

1. उपन्यास
2. कहानी संग्रह
3. संस्मरण एवं रेखाचित्र
4. बाल-साहित्य

** तृतीय अध्याय :

शिवानी के उपन्यास साहित्य में वस्तु और शिल्प :

1. वस्तु योजना
2. चरित्र चित्रण की कला
3. कथोपकथन
4. भाषाशैली
5. अभिव्यंजना आदि

** चतुर्थ अध्याय :

शिवानी के कहानी साहित्य में वस्तु और शिल्प :

1. वस्तु योजना

2• चरित्र चित्रण की कला

3• कथोपकथन

4• भाषाशैली

5• अभिव्यंजना आदि

** पंचम अध्याय :

शिवानी के कथा साहित्य में प्रतिबिंबित समाज :

1• राजनैतिक

2• सामाजिक

3• आर्थिक

4• पारिवारिक

5• सांस्कृतिक

6• साहित्यिक आदि

** उपसंहार : शिवानी की हिन्दी साहित्य को देन :

प्रस्तुत शोध-प्रबंध की सफलता के लिये मैं यदि कृतज्ञता प्रदर्शित न करूं तो मैं निगुणी और महादोषित व स्वार्थी कहलाऊंगा ।

सर्वप्रथम मैं उनका अंत:करणपूर्वक आभारी हूँ जिन्हों ने मुझे योग्य शिष्य मानकर अंत तक पथदर्शक रहे हैं । वे मेरे गुरुजी श्री प्रताप नारायण झा साहब म•स• विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के तत्कालिन अध्यक्ष श्री शुक्लजी का भी आभारी हूँ जिन्हों ने मेरा रजिस्ट्रेशन दर्ज करवाया । शिवानीजीके स्नेहमयी पत्रों से प्रेरित होकर कार्यान्वित हुआ अत: इनका भी हृदय से धन्यवाद प्रकट

करता हूँ । इस कार्य के लिये सामग्री बटोरने में मुझे कई लोग सहायक रहे हैं । म. स. विश्वविद्यालय के पुस्तकालय के अधिकारीगण, आई. पी. सी. एल मेनेजमेन्ट, आई. पी. सी. एल. ओफीसर्स क्लब, आई. पी. सी. एल एम्लोइस क्लब एवम् आई. पी. सी. एल स्कूल के पुस्कालयों का भी विशेषकर आभारी हूँ जहाँ से प्राप्य सभी पुस्तकों को पढ़ने की सुविधा दी है । इसके अतिरिक्त मेरे परम मित्र सुधीर देसाई का भी शुक्र गुजार हूँ जिन्होंने मुझे इस कार्य हेतु बहुत सहायता की ।

अंत में इस शोध-प्रबंध की सफलता के लिये प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहसयक सभी गुरुजनों एवम् अन्य के प्रति आभार प्रकट करता हूँ तथा सभी गुरुजनों के आशीर्वाद से इस प्राप्ति के लिये अंत:करणपूर्वक कृतज्ञता के साथ नमन करता हूँ ।

निवेदक

(भरत वी. वाघेला)